मिंट रोड की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ*

दुव्वुरी सुब्बाराव

1. कोलकाता, जिसे सिटी ऑफ जॉय भी कहा जाता है, में समाचार प्रदर्शनी (न्यूज़ीबिशन) का उद्घाटन करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

2. पिछले वर्ष रिज़र्व बैंक ने प्लैटिनम जयंती मनायी। समारोह के हिस्से के रूप में हमने रिज़र्व बैंक के 75 वर्ष के इतिहास को लिपिबद्ध करने के लिए 'मिंट रोड माइलस्टोन्स' शीर्षक एक पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में अभिलेख के रूप में शामिल की जाने वाली सामग्री का एक बहुमूल्य संकलन है जिसमें फोटोग्राफ, समाचारों की करतनें, दस्तावेज आदि शामिल हैं। साथ ही इनके बारे में संक्षिप्त वर्णन भी है जो सारी सामग्री को रोचक ढंग से आपस में जोड़ने का कार्य करता है। वास्तव में हमने जिस सामग्री का संग्रह किया वह अत्यंत रोचक तथा अनूठी थी। इसलिए हमने सोचा कि यदि इसे प्रदर्शनी के रूप में एक स्थान पर रखकर अधिक-से-अधिक लोगों को देखने का मौका दिया जाए तो यह एक महान सार्वजनिक सेवा का कार्य होगा।

3. परंतु हम कोलकाता में प्रदर्शनी का आयोजन क्यों कर रहे हैं? इसका कारण यह है कि यहीं से रिज़र्व बैंक की शुरुआत हुई। रिज़र्व बैंक का पहला केंद्रीय कार्यालय यहां इसी भवन में था। इसलिए यह उचित ही है कि बैंक के अतीत को दस्तावेजों में समेटने तथा इसके भविष्य को रेखांकित करने के प्रयास का स्थान भी यहीं होना चाहिए।

4. केंद्रीय बैंक के रहस्य को उजागर करने के लिए आउटरीच कार्यक्रमों के जरिए जो प्रयास किए गए, यह प्रदर्शनी उसी का एक हिस्सा है। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य दर्शकों को उन व्यापक परिदृश्यों, चिंतनों तथा विचारों के बदलते आयामों से परिचित कराना है जो वर्षों के दौरान बैंक के नीतिगत प्रयासों की आधार-भूमि रहे हैं।

5. प्रदर्शनी को ऐसे नौ हिस्सों में प्रस्तुत किया गया है जो बैंक की विकास-यात्रा के विविध दौर का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये प्रतिदर्श दर्शकों को केंद्रीय बैंकिंग के 75 वर्षों के इतिहास को दर्शाते हैं जिनमें महत्त्वपूर्ण घटनाएं और नीतियां शामिल हैं।

6. 1 अप्रैल 1935 को यहीं कोलकाता में निजी शेयरधारकों की एक संस्था के रूप में रिज़र्व बैंक की शुरुआत हुई। उसके कुछ ही समय बाद यह मुंबई में आ गया और 1949 में इसका राष्ट्रीयकरण किया गया। स्वतंत्रता के बाद ही बैंक ने एक नए गणतांत्रिक देश की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए स्वयं को पुन:स्थापित किया और एक गरीब देश के विकास के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के अनुरूप अपने कार्यों को पुनः परिभाषित किया।

7. साठ का दशक संस्थाओं के निर्माण का दौर रहा जिसमें रिज़र्व बैंक ने कृषि तथा औद्योगिक कर्ज की प्रणाली को औपचारिक रूप दिया। राज्य वित्त निगम जैसी संस्थाओं के निर्माण को साकार रूप दिया तथा इसने जमा बीमा निगम, भारतीय यूनिट ट्रस्ट के रूप में पहला म्यूचुअल फंड, शीर्ष विकास बैंक के रूप में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आइडीबीआइ) जैसी संस्थाओं का गठन करने में सहायता की।

8. सत्तर का दशक बैंकों के राष्ट्रीयकरण का दौर रहा जिसने बैंकिंग को विशेष वर्ग से आम जन तक लाकर एक नए युग की शुरुआत की। यह एक ऐसी अवधि भी थी जब बैंको ने गरीबी दूर करने के सरकार के कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

9. अस्सी के दशक में सुखमय चक्रवर्ती समिति की सिफारिशों के अनुसार उदारीकरण के बीज बोए गए। हमने क्रमबद्ध तथा नपे-तुले ढंग से बाजारों का विकास करने की ओर ध्यान केंद्रित किया।

10. नब्बे के दशक की शुरुआत में हमने भुगतान संतुलन संकट का सामना किया। उसके बाद स्थिरीकरण तथा ढांचागत समायोजन कार्यक्रमों की जो शुरुआत हुई उससे भारत के आर्थिक तथा वित्तीय विकास में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आया। बैंकिंग क्षेत्र के सुधार कार्यक्रमों ने बैंकिंग प्रणाली को सुदृढ़ बनाने में मदद की और इसने इसे अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया।

11. नई सहस्राब्दि के साथ भारत की वृद्धि दर ने नई गति पकड़ी जब विकास की दर 'हिंदू दर' से ऊपर उठकर एक स्पष्ट उच्चतर दायरे में चली गई। यह वह दौर है जब बासेल II मानदंडों को स्वीकार किया गया, भुगतान प्रणाली में उल्लेखनीय सुधार किया गया तथा नीतिगत फोकस समावेशन के मुद्दे की ओर रहा। भारत वैश्विक वित्तीय संकट को झेलने में सफल रहा जहां रिज़र्व बैंक ने अपनी नीतिगत कार्रवाई तथा भूमिका के चलते सभी का ध्यान आकर्षित किया।

12. नई सहस्राब्दि के दूसरे दशक की ओर अग्रसर होते समय हमारा प्रयास होगा कि हम रिज़र्व बैंक को एक ज्ञान उन्मुख संस्था के रूप में स्थापित करें; वित्तीय शिक्षा तथा समावेशन की मुहिम के साथ-साथ लोगों तक पहुंचने के प्रयास को जारी रखें; तथा अंत में बैंक के इतिहास

*कोलकाता में 8 दिसंबर 2010 को समाचार प्रदर्शनी (न्यूज़ीबिशन) के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव का संबोधन।

तथा परंपराओं को दस्तावेजों के रूप में जीवित रखने की कोशिश करें।

13. भारतीय रिज़र्व बैंक की 75 वर्ष की यात्रा हमें उस समय के उत्साह तथा नीतिगत सरोकारों की एक झांकी प्रस्तुत करती है। हमारे सामने 'वह नोट जो कभी जारी नहीं हुआ' के रूप में किंवदंती भी है। यह नोट वह है जिस पर पहले गवर्नर ओसबॉर्न स्मिथ के हस्ताक्षर हैं। इसे जारी नहीं किया गया क्योंकि एडवर्ड VII के दिल के मामले इसके कारण बन गए थे। राजा के पदत्याग के कारण नोट को जारी करने में देरी हुई तथा रिज़र्व बैंक द्वारा जारी किए गए पहले नोट पर गवर्नर जेम्स टेलर के हस्ताक्षर हैं।

14. प्रदर्शनी में कला के प्रति रिज़र्व बैंक के रुख (कलाप्रेमी तथा भौतिकवादियों) की किंवदंतियों तथा बैंक के नई दिल्ली कार्यालय के प्रवेश द्वार पर यक्ष और यक्षिणी की प्रतिमाएं लगाते समय व्यक्त की गई लोक-भावना का वृत्तांत भी दिया गया है। इन प्रतिमाओं ने कई लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाई तथा इस बारे में संसद में प्रश्न भी पूछे गए।

15. यह प्रदर्शनी न केवल घटित घटनाओं का क्रमिक अभिलेख है बल्कि इसमें मीडिया रिपोर्ट के माध्यम से यह जानने का प्रयास भी किया गया है कि इन घटनाओं के बारे में लोगों के क्या विचार थे। इसके पहले, भारतीय रिज़र्व बैंक का मौद्रिक संग्रहालय भारत में मुद्रा के इतिहास का दस्तावेजीकरण कर चुका है तथा इसने बैंक के सार्वजनिक शिक्षा तथा आउटरीच कार्यक्रमों में केंद्रीय भूमिका निभाई है।

16. यह एक संकल्पनात्मक प्रदर्शनी है। हम इसका विस्तार व सुधार करना चाहते हैं ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि अवधि के दौरान आर्थिक नीति के निर्माण के क्षेत्र में रिज़र्व बैंक का योगदान क्या था।

17. जब कभी भी बैंक भविष्य की ओर दृष्टिपात करेगा हमारा विश्वास है कि यह प्रदर्शनी भारत में वित्तीय शिक्षा की दिशा में रिज़र्व बैंक द्वारा किए गए एक छोटे-से प्रयास का साक्षी बनेगी। हमारा विश्वास है कि इससे लोगों में रुचि बढ़ेगी और न केवल बैंकरों तथा अर्थशास्त्र के छात्रों में बल्कि आम लोगों में भी बैंकिंग और वित्त की समझ बढ़ेगी।